अधिकतम दक्षता से पशुधन उत्पादकों का उत्पादन करने के विचार से, प्राकृतिक चरागाहों का सुधार, व्यवस्था तथा उपयोग सम्बन्धी समक्ष मितव्ययी तथा व्यावहारिक पद्धतियों के विकास के सम्बन्ध में कार्य किया गया है।

वनस्पति-पशु सम्बन्ध-प्रभाग में विभिन्न प्रकार के घास तथा चारा की फसलों की पचनीयता के सम्बन्ध में अनुसंधान कार्य किये गये हैं। जांच की गति बढ़ाने की दृष्टि से, संस्थान में पचनीयता के निर्धारण के लिए बहुत सी किस्मों के चारे की फसलों का अन्तः पात्र तकनीकों का मानकीकरण किया गया है। लोबिया तथा हरी मक्की के 2 : 1 मिश्रण से घास बनाने के लिए एक तकनीक का विकास किया गया है, जो जानवरों के पालन की आवश्यकता प्रदान करती है। उच्च कोटि की बरसीम घास तैयार करने की एक सक्षम तथा मितव्ययी पद्धति विकसित की गई है।

खरपतवार परिस्थिति की तथा नियंत्रण प्रभाग ने रासायनिक शाकनासी का प्रयोग कर खरपतवारों के सब पहलुओं तथा उनके नियंत्रण पर अनुसधान किया है।

कृषि इंजीनियरिंग अनुभाग ने पशुओं से चलाये जाने वाले सिंचाई नाली तथा बाध बनाने का विकास किया है, जोकि एक ही बार के संचालन मे वांछित आकार की नालियों को बना सकता है। जाड़ों के दौरान पाला से फसलों की सुरक्षा के लिये सादा तथा मितव्ययी स्मोक स्क्रीन जेनेरेटर का भी विकास किया गया है। किनारों पर लसून घास तथा अन्य फसलों की बुवाई के लिए, एक देशी प्तो माउन्टेड सीड ड्रिल तैयार किया गया है। संस्थान ने पौधों में शाकनाशी / खरपतवार-नाशी के चिस्ती प्रयोग के लिये विभिन्न प्रकार के नोजल्स टीका के साथ शाकनाशी उपकरण का भी विकास किया है।

(ख) भारतीय चरागाह तथा चारा अनुसंधान संस्थान में किये गये अनुसंधान के परिणाम, किसानों में प्रसार करने के लिये राज्यों के कृषि निदेशकों, पशु-पालन निदेशकों, राज्यों के दुग्ध आयुक्तों तथा कृषि मंत्रालय के कृषि विस्तार निदेशालय को बताये जाते हैं। इसके अतिरिक्त, क्षेत्रीय भाषाओं में अनुसंधान तथा लोकप्रिय लेख प्रकाशित किये जाते हैं और कृषकों को उपलब्ध किए जाते हैं। संस्थान ने हाल ही मे एक विस्तार प्रभाग स्थापित किया है, जो कृषकों को अनुसधान के परिणाम उपलब्ध करने के लिये सीधा उत्तरदायी होगा।

झांसी में आयुर्वेदिक साहित्य में उच्च अध्ययन तथा अनुसंधान कार्यों के लिये केन्द्रीय संस्थान की स्थापना

2396 **डा० गोविन्द दास रिछारिया :** क्या **स्वास्थ्य और परिवार नियोजन** मंत्री 12 जुलाई, 1971 के अतारांकित प्रश्न संख्या 4557 के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) झांसी मे आयुर्वेदिक साहित्य में उच्च अध्ययन तथा अनुसधान कार्य करने हेतु केन्द्रीय संस्थान स्थापित करने सम्बन्धी योजना को कार्यरूप देने मे असाधारण विलम्ब के लिये उत्तरदायी अधिकारियो के विरुद्ध सरकार का विचार क्या कार्यवाही करने का है ; और

(ख) उक्त सस्थान की स्थापना मे सरकार कितना समय और लेगी ?

स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मन्त्रालय में राज्य मन्त्री (प्रो० डी० पी० चट्टोपाध्याय) : (क) किसी अधिकारी की ओर से कोई असाधारण विलम्ब नही हुआ है।

(ख) क्योंकि सस्थान की स्थापना संबंधी कानूनी, वित्तीय तथा अन्य पहलुओं का अध्ययन किया जा रहा है, अतः यह अनुमान लगाना कठिन है कि इसकी स्थापना में कितना समय लगेगा।